सम्पादकीय

देश विदेश

राष्ट्रीय

जनजातीय गौरव को बढ़ावा देने में अग्रणी मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश वह राज्य है, जिसकी पहल पर देश को 'जनजातीय गौरव दिवस' मिला है। यह बात तो हर कोई मानता है कि मध्यप्रदेश की सरकार ने जनजातीय नायकों का गौरव बढ़ाने के लिए उनसे जुड़े स्मारकों का आगे बढ़कर विकास किया है। राजा शंकरशाह और रघुनाथ शाह, रानी कमलापति, रानी दुर्गावती, टंट्या मामा और भीमा नायक से लेकर कई नायकों के योगदान लोगों को परिचित कराने के उल्लेखनीय कार्य किए हैं। मंडला के मेडिकल कॉलेज का नाम बलिदानी हृदयशाह के नाम पर किया गया। वहीं, छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम 'राजा शंकरशाह विश्वविद्यालय' किया। हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर 'रानी कमलापति रेलवे स्टेशन' किया गया। जबलपुर में 100 करोड़ की लागत से 'रानी दुर्गावती स्मारक' को विकसित किया जा रहा है। जनजातीय गौरव को बढ़ाने के साथ ही जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए भी मध्यप्रदेश सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। विगत 20 वर्षों में जनजातीय योजनाओं का बजट 1000 प्रतिशत बढ़ा है। मध्यप्रदेश पहला राज्य है, जहाँ जनजातीय समुदाय के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिए ऐसा कानून को लागू किया गया है। जनजातीय समुदाय से आनेवाली पहली महिला राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की गरिमामयी उपस्थिति में 15 नवंबर, 2022 को मध्यप्रदेश के 20 जिलों में 89 विकासखंडों को ऐसा कानून की सौगात मिली। मध्यप्रदेश के बजट का अध्ययन करें तो ध्यान आएगा कि 2003-04 में जनजातीय कार्य विभाग का बजट 746.60 करोड़ रुपये था। जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए संचालित योजनाओं को बजट की कमी का सामना न करना पड़े, इसके लिए भाजपा सरकार ने सबसे पहला काम यही किया कि जनजातीय कार्य विभाग के बजट में लगातार बढ़ोतरी की। वर्ष 2003-04 के मुकाबले वर्ष 2023-24 में जनजातीय कार्य विभाग का बजट 1000 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 11,768 करोड़ रुपये का हो गया है। इस बजट का उपयोग जनजातीय वर्गों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, रोजगार एवं अन्य बुनियादी व्यवस्थाओं के साथ ही विकास कार्यों को गति देने में किया गया है। विद्यार्थियों को शिक्षा के समुचित अवसर एवं आर्थिक सहयोग के साथ ही सरकार की ओर से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण भी दिलाया जा रहा है। कम्प्यूटर कौशल सिखाने के साथ जनजातीय युवाओं को पुलिस और सेना में भर्ती का प्रशिक्षण देने का काम भी मध्यप्रदेश में किया जा रहा है। जनजातीय वर्गों के उत्थान सशक्तिकरण के लिए आहार अनुदान योजना, शिकल सेल उन्मूलन मिशन, मुख्यमंत्री राशन आपके द्वार ग्राम, देवाणप्पा, अनुसूचित जनजाति ऋण विमुक्ति अधिनियम-2020, सिकल मिशन, प्रधानमंत्री वन-धन योजना, आकांक्षी योजना, प्रतिभा योजना, आवास सहायता योजना, विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति, प्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति, अखिल भारतीय सेवाओं के लिए कोचिंग एवं प्रोत्साहन तथा जनजातीय लोक कलाकृतियों एवं उत्पादों की जीआई टैगिंग जैसे कदम मध्यप्रदेश में उठाए गए हैं।

जनजातीय गौरव दिवस पर यह अवसर याद रखना चाहिए कि अमारीकी ताकतों ने अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र के अंतर्गत जनजातीय समुदाय को भ्रमित करने के लिए 9 अगस्त को 'वर्ल्ड इंडिजिनियस पीपल्स डे' को 'आदिवासी दिवस' कहकर भारत में मनवाया दिया गया, जबकि इस दिन का भारत और जनजातीय गौरव के साथ कोई संबंध नहीं है। वास्तव में यह तो दुःखद त्रासदी की शुरुआत का दिन है। ब्रिटिस सेना ने अमेरिका के मूल निवासियों का नरसंहार किया। बाद में, उनके अपराध बोध से मुक्त होने के लिए 'वर्ल्ड इंडिजिनियस पीपल्स डे' के रूप में 9 अगस्त को चुना गया। यहाँ यह भी ध्यान रहें कि वैश्विक षड्यंत्र के अंतर्गत ही 'वर्ल्ड इंडिजिनियस पीपल्स डे' का अनुवाद 'विश्व आदिवासी दिवस' के रूप में किया गया है। वास्तविकता यह है कि संयुक्त राष्ट्र ने अब तक 'इंडिजिनियस पीपल' की स्पष्ट परिभाषा तक नहीं की है, यही कारण है कि जब 1989 में विश्व मजदूर संगठन द्वारा 'राइट्स ऑफ इंडिजिनस पीपल' क्रमेलगन क्रमांक-169 घोषित किया गया, तब उसे विश्व के 169 में से केवल 22 देशों ने ही स्वीकार किया। इसका मुख्य कारण 'इंडिजिनस पीपल' शब्द की परिभाषा को स्पष्ट नहीं करना ही था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने भारत माता के महान बेटे बिरसा मुंडा की जयंती (15 नवंबर) को 'जनजाति गौरव दिवस' के रूप में मान्यता देकर प्रशंसनीय कार्य किया है। जनजाति वर्ग के इस बेटे ने भारत की सांस्कृतिक एवं भौगोलिक स्वतंत्रता के लिए महान संघर्ष किया और बलिदान दिया।

अंतर्राष्ट्रीय

धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद शब्द हटाने का सुझाव...बांग्लादेश के अटॉर्नी जनरल ने छेड़ी बहस

बांग्लादेश में अटॉर्नी जनरल मोहम्मद असदुज्जमां ने यह कहकर एक नई बहस शुरू कर दी है कि वहां के संविधान से 'समाजवाद' और 'धर्मनिरपेक्षता' शब्दों को हटा देना चाहिए। अटॉर्नी जनरल का यह प्रस्ताव ऐसे समय आया है जब अवामी लीग की शेख हसीना सरकार को गिरे कुछ महीने ही हुए हैं और बांग्लादेश में अभी अंतरिम सरकार चल रही है। इस प्रस्ताव से यह चिंता गहरी हो गई है कि क्या बांग्लादेश एक इस्लामी राष्ट्र बनने की ओर बढ़ रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप और खासकर विभाजन के संदर्भ में देखें तो भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश- तीनों का साझा इतिहास है। ऐसे में अंग्रेजी उपनिवेशवाद से मुक्ति के बाद जहां भारत ने लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ने का फैसला किया, वहीं पाकिस्तान को इस्लामी राष्ट्र का रास्ता भाया। बांग्लादेश की खासियत यह रही कि शुरू में पाकिस्तान का हिस्सा रहते हुए इस्लामी राष्ट्र का अनुभव लेने के बाद वह उससे अलग हुआ और उसने अपने लिए धार्मिक रूप से उदार राष्ट्र के स्वरूप को बेहतर माना। बांग्लादेश के संदर्भ में यह बात ज्यादा मायने इसलिए भी रखती है कि एक देश के रूप में उसका जन्म ही धार्मिक उदारता जैसे मूल्यों की सार्थकता सिद्ध करता है। पाकिस्तान के अलग अस्तित्व के पीछे यह मान्यता थी कि धर्म एक राष्ट्र के बनने का ठोस आधार है। भारत ने विभाजन को स्वीकार करते हुए भी इस मान्यता को ठुकरा दिया। बांग्लादेश के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय ने एक बार फिर इस बात की पुष्टि कर दी कि सिर्फ धर्म किसी राष्ट्र के निर्माण की बुनियाद नहीं हो सकता।

तीनों देशों की अब तक की यात्रा के उतार-चढ़ावों पर गौर करें तो उससे भी यह बात स्थापित होती है कि धार्मिक कट्टरता किसी देश को सुख, शांति और समृद्धि की ओर नहीं ले जाती। पाकिस्तान में जिस तरह से लोकतंत्र की राह पर लौटने की कोशिशें बार-बार नाकाम होती रही हैं उससे साफ है धार्मिक कट्टरता के गड्ढे में गिरना जितना आसान है, उससे निकलना उतना ही मुश्किल। बांग्लादेश ने पिछले करीब एक दशक में जिस तरह से विकास के कीर्तिमान बनाते हुए ह्यूमन डिवेलपमेंट इंडेक्स में अपनी स्थिति सुधारी, उसके पीछे भी धार्मिक कट्टरता से दूरी की एक प्रमुख भूमिका मानी जाती रही है।

सच है कि आज दुनिया के कई इलाकों में धार्मिक कट्टरता का जोर बढ़ रहा है। उसी तर्ज पर अपने देश में भी अक्सर धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ माहौल बनाने की कोशिशें कुछ हलकों से होती हैं। लेकिन यह बात याद रखने की है कि धर्म चाहे जो भी हो, कट्टरता अपनी विशेषता नहीं छोड़ती। उससे बिछाए जाल को समझना और उससे दूरी बनाए रखना हर देश और समाज के विकास की बुनियादी शर्त है।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'-

अंजनी सुत हनुमान जैसा कोई सौभाग्यवान नहीं

भगवान महेश्वर की लीला के रहस्य को सबने अनुभव किया था। भगवान सदाशिव सभी अवस्थाओं में सभी का सभी प्रकार से कल्याण ही करते हैं। उनके द्वारा रचे गए कष्टकारी विधान भी अपने परिणाम में सर्वविधि मंगलकारी ही सिद्ध होते हैं। बाल हनुमान को पूर्णतया स्वस्थ व प्रसन्न देखकर उनका कोप अब शांत हो चुका था। अब उनके नयनों में सभी के लिए कृपा के भाव थे। बालक हनुमान विविध देव शक्तियों के वरदानों से अनुग्रहित हो रहे थे।

भगवान महेश्वर शिव एवं भगवती महेश्वरी शिवा के पुत्र विघ्न विनाशक श्रीगणेश एवं देवसेनानायक कार्तिकेय के वरदान उन्हें मिल चुके थे। इसके बाद चतुरानन ब्रह्मा ने इंद्र की ओर देखा। उनकी इस दृष्टि ने जैसे बिना कह सब कुछ कह दिया। देवराज इंद्र के चेहरे पर अभी तक संकोच की छाया थी। कहीं अंतर्मन में थोड़ा भय भी व्याप्त था, हालांकि माता पार्वती को विहँसते देखकर उन्हें बहुत राहत मिली थी। वे दो कदम बढ़कर आगे आए और उन्होंने तनिक झुककर बाल कपि के माथे पर हाथ रखा। फिर शांत स्वर में बोले- पुत्र! मैं तुम्हारा अपराधी हूँ। इस अक्षमय अपराध का मैं जो भी प्रायश्चित करूँ, वह कम होगा''।

''**सबसे** पहले मैं कृतज्ञ हूँ ब्रह्मर्षि वशिष्ठ का, भगवान ब्रह्मा का, देवाधिदेव महादेव एवं जगदंबा पार्वती का, जिन्होंने कुपित होते हुए भी मुझ पर कोप नहीं किया। पुत्र! मेरे वज्र के कारण तुम्हारी हनु (ठुड्डी) चोटिल हुई, परंतु इसी चोटिल हनु के कारण तुम्हारा यश सदैव अमर रहेगा।'' फिर उन्होंने महर्षि दधीचि की ओर देखा और कहा '' हे ऋषिश्रेष्ठ! मैं आपका अपराधी हूँ, मुझे दंड दे या क्षमा, सब आप पर निर्भर है।'' देवराज इंद्र के इस कथन पर महर्षि दधीचि मौन बने रहे। बस, उन्होंने छलकते हुए नेत्रों से भगवान शिव की ओर देखा। भगवान शिव के मन और नयन में तो अपने इस परमभक्त के लिए सद ही अनंत स्नेह था। अपने उन प्रभु का संकेत पाकर ऋषि दधीचि ने इंद्र की ओर देखते हुए आश्वस्ति का हाथ उठाया।

देवराज इंद्र, महर्षि के इस संकेत से अनुग्रहित हुए। इस अनुग्रह प्राप्ति के साथ ही उन्होंने बाल हनुमान की ओर देखते हुए कहा-''हे हनुमान! आज से सदा-सर्वदा के लिए मेरे वज्र सहित अन्य सभी अस्त्रों से सुरक्षित रहोगे। इसी के साथ अब से तुम्हारा संपूर्ण शरीर वज्र की ही भाँति दृढ़ और अभेद्य होगा।'' इंद्र के इस वरदान पर सभी ने प्रसन्नता जताई। इंद्र के वर देने के बाद परम तेजस्वी सूर्यदेव मुखर हो बोले- ''पुत्र! तुमने अपनी साधना और पराक्रम से मुझे प्रसन्न किया है। तुमने पवित्रता के अर्जन के लिए मेरी साधना की है, मैं तुम्हें आशीष देता हूँ कि तुमसे अधिक परम पवित्र त्रिभुवन में कोई दूसरा न होगा। तुम्हारा संपूर्ण जीवन तुम्हारे आराध्य प्रभु श्रीराम की भाँति पवित्र ही नहीं, पवित्रदायी होगा। आने वाले युगों में अध्यात्म विद्या के जिज्ञासु एवं श्रीराम भक्त तुम्हारे स्मरण एवं आराधना से पवित्रता का वरदान पाएँगे।''

इतना देकर भी भगवान सूर्यदेव को संतुष्टि नहीं मिली। थोड़ी देर तक रुककर वे पुनः बोले- ''मैं तुम्हे अपने तेज का शतांश प्रदान करता हूँ। साथ ही समय आने पर तुम्हें शिक्षा प्रदान कर संपूर्ण वेद शास्त्रों का मर्मज्ञ बना दूँगा। भविष्य में तुम अद्वितीय विद्वान एवं वक्ता होगे।'' भगवान अग्निदेव ने आगे बढ़कर कहा- ''मेरे ताप, दाह एवं शक्ति से तुम सर्वथा सुरक्षित रहोगे।'' फिर वरुणदेव ने कहा- ''हे श्रीराम भक्त! तुम हमेशा ही मेरे पाश एवं जल से सुरक्षित रहोगे।'' माता अंजनी एवं पिता वानरराज केसरी की प्रसन्नता का तो जैसे कोई ठिकाना ही न था। उन्हें यह सब अकल्पनीय एवं विलक्षण लग रहा था।

आध्यात्मिक लेख

इस सृष्टि में एक विचित्र सा विनिमय हुआ फिर भगवान सूर्यदेव बोले- वत्स हनुमान! अभी तक मैंने जिस ज्ञान विविध आयामों की चर्चा की, उनके प्रायोगिक एवं व्यवहारिक अनुभव अभी शेष हैं। अब तुम्हें योग संयम को साधकर, इन अनुभवों को पाना होगा।

सृष्टि के उद्गम का रहस्योद्घाटन

हनुमान भगवान सूर्यदेव के द्वारा उच्चारित सत्य को सुन रहे थे, आत्मसात् कर रहे थे। श्रवण करते समय उन्हें यह सत्य, अद्भुत, मनन करने के क्षणों में आश्चर्यजनक और निदिध्यासन करने के पलों में अलौकिक अनुभव हो रहा था। सूर्यदेव ने ज्ञान के विविध आयामों का जिस ढंग से रहस्योद्घाटन किया था, वह सर्वथा भिन्न व आश्चर्यपूर्ण था। महाराज केसरी व देवी अंजनी स्वभाव से ही सत्संग प्रिय थे। इसी वजह से उनके भवन में तपस्वियों, विद्वानों, आचार्यों, संतों का आगमन नियमित बना रहता था। वे स्वयं भी हनुमान को साथ लेकर भिन्न-भिन्न आश्रमों व गुरुकुलों में जाते रहते थे। इसलिए हनुमान को सहज ही ज्ञान का बहुआयामी बोध पाने का सुअवसर मिलता रहता था।

लेकिन भगवान भुवन भास्कर ने ज्ञान के आयामों को जिस विधि से उद्घाटित किया था, उसमें सहज ही एक अलग बात थी। इस घटनाक्रम में एक सच यह भी जुड़ा था कि ज्ञान देने वाले स्वयं भगवान सूर्य थे, जो इस जगत की आत्मा हैं। जिनसे इस जगत में जीवन प्रकाशित होता है। साथ ही ज्ञान पाने वाले स्वयं महारुद्र बालरूप में सम्मुख थे। यह अद्भुत, विचित्र, किंतु सुखद संयोग था। इस संयोग को पाकर गुरु व शिष्य, दोनों ही स्वयं में प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे। प्रसन्नता के इन पलों में प्रसन्नदृष्टि से दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा।

इस सृष्टि में एक विचित्र सा विनिमय हुआ फिर भगवान सूर्यदेव बोले- वत्स हनुमान! अभी तक मैंने जिस ज्ञान विविध आयामों की चर्चा की, उनके प्रायोगिक एवं व्यवहारिक अनुभव अभी शेष हैं। अब तुम्हें योग संयम को साधकर, इन अनुभवों को पाना होगा। संयम के तीनों तत्व तुम्हें जन्म के साथ ही स्वतः सिद्ध हैं। धारणा, ध्यान व समाधि के सम्मिलित ज्ञान में तुम्हें विशेषता हासिल है। विद्याध्ययन के अगले क्रम में तुम्हे इसका प्रयोग करना है। इसके द्वारा क्रम से स्थूल, सूक्ष्म व अतिसूक्ष्म तत्वों के ज्ञान के साथ ही अतीत वर्तमान व भविष्य, इन तीनों कालों में अभिव्यक्त होने वाली ज्ञान-संपदा का सहज अर्जन हो सकेगा।

भगवान सूर्यनारायण के इस कथन को सुनकर हनुमान ने सहज ही अपने स्वरूप का स्मरण किया। स्व-स्वरूप का स्मरण करते ही धारणा, ध्यान व समाधि के तत्व उनमें प्रकाशित व जागृत हो गए। हनुमान संयम के प्रयोग के लिए तैयार हैं, इस सच का ज्ञान सूर्यदेव को हो गया। अब उन्होंने कहा- वत्स हनुमान! संयम का प्रयोग क्रमानुसार एक के बाद एक करना होगा। सामान्य क्रम में इसका विधान है कि स्थूल विषयों से क्रमानुसार सूक्ष्म की ओर गतिमान हों, पर वत्स! तुम विशिष्ट हो इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम सृष्टि विज्ञान के सत्य का अनुभव करो।